पंचम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

120

हिंदी उपन्यास साहित्य के आकाश में मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप में इलाचन्द्र जोशी जी का नाम सुप्रसिध्द हैं । इलाचन्द्र जी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के बहिर्जगत् की अपेक्षा अंतर्जगत् को अधिक महत्व दिया हैं । इसी कारण उनके उपन्यासों का एक मात्र उद्देश्य स्त्री - पुरुष पात्रों के चेतन और अचेतन मनपर प्रकाश डालने का ही रहा । उनके उपन्यासों की विशेषता यह रही हैं कि उपन्यास का नायक नारी पर सम्पूर्ण अधिकार चाहता हैं,परंतु जब उनके बीच तीसरा व्यक्ति आता हैं,तो नायक यह बात सह नहीं सकता और इसी कारण नायक और नायिका के सम्बन्धों में कटुता, संदेह एवं आन्तरिक संघर्ष निर्माण हो जाता हैं -

जैसे `लज्जा` उपन्यास में लज्जा और उसका भाई राजू । बहन - भाई के प्रेम के बीच, जब डाक्टर कन्हैयालाल आते हैं तब डाक्टर के साथ लज्जा की बढती हुई घनिष्ठता से राजू जैसे उदार,संयमी एवं तीव्र बुध्दिवाले भाई को धक्का पहुँच जाता हैं और वह हीनता की ग्रंथी से अन्ततः आत्महत्या कर बैठता हैं । जिससे लज्जा के व्यवहार में परिवर्तन आता हैं । वह अपने किये पर पछताती हैं और काम वासना से ऊपर उठकर यथार्थ की ओर अग्रेसर होती हैं ।

`संन्यासी` उपन्यास में पुरुष का अहं और उसका नारी पर सम्पूर्ण अधिकार जमाने की व्यथा वर्णित हैं । इस में पात्रों के चेतन - अचेतन मन की गहराइयों का उद्घाटन हुआ हैं, उसे नायक नन्दकिशोर और नायिका शान्ति तथा जयन्ती के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं । इसके साथ ही साथ इस में मानव जीवन में गलत फहमियों के कारण आनेवाली कटुता का सुंदर चित्रण किया हैं । यह कटुता इतनी बढ जाती हैं कि नन्दकिशोर को संन्यास लेना पडता हैं ।

`पर्देकी रानी` उपन्यास में नायिका निरंजना, नायक इन्द्रमोहन और शीला के माध्यम से मानव मन की गहराई में बैठी विकृत अवस्था का सफल चित्रण किया हैं और अन्ततः इस विकृति से आयी, मानव जीवन की कटुता का दर्शन कराया हैं ।

` प्रेत और छाया ` उपन्यास का नायक पारसनाथ अपने पिता के प्रताडना से नारी सम्बन्धी द्वेष भावना को लेकर जीता है, उसके पिता ने उसे कहा था, ` तू एक नाजायज संतान है । ` जिससे वह मानसिकता का शिकार बनकर संपूर्ण स्त्री जाति का द्वेष करने लगता है, परंतु अन्तत: हीरा से विवाह कर अपना जीवन देश सेवा पर न्योछावर करता है ।

` निर्वासित ` उपन्यास में जोशी जी ने कवि महीप और नीलिमा का असफल प्रेम का चित्रण अत्यंत सफल ढंग से प्रस्तुत किया है और पात्रों के संघर्ष मय जीवन को प्रस्तुत कर समाज में पायी जानेवाली जमींदारों का शोषण और दबाव का चित्रण प्रस्तुत किया, जिस से दो प्रेमिओं को अपने जीवन भर अलग रहना पडता है इतनाही नहीं बल्कि अंत में कवि महीप को निर्वासित होना पडता है ।

` सुबह के भूले ` में बालमनोविज्ञान का सुंदर चित्रण देखने मिलता है इसके साथ ही साथ पूँजीपति और मॉडर्न कहनेवालों का पर्दाफाश और फिल्मी जीवन की असलियत को सामने रखा है । गुलबिया (गिरिजा) के माध्यम से नारी स्वतंत्रता का समर्थन भी किया है ।

` जहाज का पंछी ` उपन्यास में बेकारी से ग्रस्त युवकों की मानसिकता, वेश्या-नारी की मानसिक अवस्था आदि समस्या का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

` भूत का भविष्य ` उपन्यास में उपन्यासकार ने अछूतों की विकट समस्या पर प्रकाश डाला है ।

` ऋतुचक्र ` उपन्यास में मानव जीवन को ` ऋतुचक्र ` के समकक्ष रखकर किस प्रकार मानव जीवन भी उसके समान गतिशील है यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है और आगे यह भी बताया गया है कि प्रकृति के मनोहर परिवेश में रहकर भी मानव मनोविकृति का शिकार हो जाता है ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इस प्रकार हम देखते हैं कि जोशी जी के पुरुष पात्र दुर्बल, संदेहशील, अहंकारी और काम वासनाओं से प्रेरित हैं, इसके विपरित नारी पात्र पुरुषों के अहं पर प्रहार करके अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाली, स्वावलंबी, तेजस्वी नारियाँ दिखाई देती हैं ।

अन्त में हम इतना ही कह सकते हैं कि इलाचन्द्र जोशी जी ने मानव मन की चेतन और अचेतन अवस्था में आये परिवर्तनों को अत्यंत बखूबी के साथ विश्लेषितकर, हमारे सामने प्रस्तुत करने का भरसक प्रयत्न किया है और इसमें उन्हें अपेक्षित मात्रा में सफलता भी मिली है इसमें कोई संदेह नहीं है ।

••